मूल्य
60/-

राष्ट्रीय मासिक • वर्ष-17 • अंक-5 • दिसंबर 2023 ISSN: 2582-4392

www.krishiworld.in

# कृषि वर्ल्ड

मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ विशेष

कृषि, पंचायत, सहकारिता, पशुपालन, मत्स्यकी, ग्रामोद्योग, ग्राम विकास, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी समाचारों पर आधारित

## मिर्च की उन्नत जैविक खेती

## आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी और उसका महत्व

•POSTAL REGN NO.- C.G./RYPDN/35/2022-24 •RNI NO.- CHHHIN/2007/19918 •www.facebook.com/editor.krishiworld

जल और वृक्ष जीवन के मुख्य आधार
इनका रखें हमेशा खयाल

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पंजीकृत मान्यता प्राप्त पंजीयन क्रमांक-RNI NO.-CHHHIN/2007/19918

# कृषि वर्ल्ड

वर्ष-17 अंक-05 दिसम्बर 2023

संपादक
**पुष्पकांत शर्मा**
कार्यकारी संपादक
**निधि शर्मा**
सह-संपादक
**शमी इमाम**
सलाहकार संपादक
**डॉ. बीसी जैन**
**डॉ. पीएल जॉनसन**
तकनीकी संपादक
**डॉ. नितिन कुमार तुर्रे**
**हेमंत पाणीग्रही**
**डुनेश कुमार देवांगन**
प्रतिनिधि
**मध्यप्रदेश- प्रवीण नारायण सिंह गहलोत**
**बिहार- मतीउर्रहमान**
**दिल्ली- सुमीत सिंह**
राष्ट्रीय कार्यालय
**20 बी सनसाइन काम्पलेक्स, मयूर विहार फेज-।।।**
**नई दिल्ली-110096**
प्रधान कार्यालय
**शॉप नं.-एफएफएस-51, प्रथम तल, भक्तमाता कर्मा परिसर ( आरडीए मुख्यालय ) न्यू राजेंद्र नगर रायपुर ( छ.ग. )**
**फोन-0771-4077710**
**संपादकीय विभाग- 88789-44777**
**प्रसार विभाग- 88787-11777**
**ई.मेल.-krishiworld.editor@gmail.com**

स्वामी स्पेक्ट्रम वर्ल्डवाइड के लिए प्रकाशक, मुद्रक पुष्पकांत शर्मा द्वारा मयंक ऑफसेट प्रिंटर्स, शॉप नं.-16, प्रकाश भवन, कंकाली तालाब के सामने, कंकाली पारा रायपुर से मुद्रित एवं शॉप नं.-एफएफएस-51, प्रथम तल, भक्त माता कर्मा परिसर (आरडीए मुख्यालय) न्यू राजेंद्र नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित।
फोन नं.-0771-407710
संपादक-पुष्पकांत शर्मा

सर्वाधिकार प्रकाशधीन सुरक्षित-प्रकाशित सामग्री के किसी भी प्रकार के उपयोग के पूर्व प्रकाशक/संपादक की अनुमति अनिवार्य है। पत्रिका में प्रकाशित रचना/लेखों एवं अन्य प्रकाशित सामग्रियों के विचारों से प्रकाशक/संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के वाद विवाद एवं वैधानिक प्रक्रिया केवल रायपुर जिला न्यायलयीन के अंतर्गत मान्य होगी।

## अंदर के पन्नों में.....

**18** सुगंधित फूलों की बढ़ती मांग का विकल्प सिट्रोनैला की खेती

06 | चने की उन्नत खेती- कब, क्या और कैसे करें

11 | कृषि में नवाचार-ड्रोन आधारित खेती के विभिन्न.....

16 | भण्डारगृह/गोदामों में प्रमुख नाशी कीटों व चूहों ...

34 | मेथी की खेती की जानकारी जलवायु, किस्में, रोकथाम व पैदावार

| | |
|---|---|
| आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी और उसका महत्व.... | 03 |
| मुख्यमंत्री साय के निर्देश पर बोनस राशि वितरण की तैयारियां शुरू.... | 04 |
| छत्तीसगढ़ में अलसी की उन्नत खेती की सम्भावनाऐं... | 05 |
| रेशम कीट के पालन से किसानों को बेहतर आय .... | 09 |
| छत्तीसगढ़ में तिवड़ा की उन्नत जैविक खेती... | 10 |
| कैसे करें चूहों की समस्या का निदान... | 13 |
| कृषि उद्यमिता-कृषि में उद्यमिता की आवश्यकता एवं महत्व.. | 14 |
| सुगंधित फूलों की बढ़ती मांग का विकल्प सिट्रोनैला की खेती.... | 18 |
| अलसी की जैविक, विकसित एवं उन्नत खेती.... | 20 |
| केंचुआ खाद का मृदा में उपयोग... | 22 |
| गुलाब की विकसित एवं उन्नत खेती... | 24 |
| सफेद मूसली की जैविक खेती कैसे करें.. | 26 |
| दिसंबर माह में क्या-क्या करें किसान भाई.... | 28 |
| फेरोमोन ट्रैप का खेती में महत्व और सावधानियां... | 30 |
| गोमूत्र और गोबर सर्वश्रेष्ठ उर्वरक और कीटनाशक..... | 32 |

# कृषि उद्यमिता-कृषि में उद्यमिता की आवश्यकता एवं महत्व

● **डॉ. पी मूवेंथन, उत्तम सिंह एवं सुमन**

भा.कृ.अनु.प. राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, बरोंडा, रायपुर छ.ग.

उद्यमी के द्वारा किए जाने वाले कार्य उद्यमिता की श्रेणी में आते हैं। जैसे-जोखिम वहन करना, नेतृत्व करना, नवाचार करनाए अनिश्चितताओं का सामना करना आदि। इस प्रकार यह समझा जा सकता है किं उद्यमिता से आशय व्यवसाय से जुड़े उन तमाम कार्यो से है जो किसी भी व्यवसाय को स्थायित्व प्रदान करते हैं। जिसमें वहन करना, साहस, अनिश्चितताओं का सामना, नेतृत्व करना, नवाचार करना आदि शामिल हैं।

उद्यमी शब्द का उद्भव उद्यम से माना जा सकता है। जिसका अर्थ होता है मेहनत या व्यवसाय। इसलिए हम साधारण भाषा में कह सकते हैं कि वह व्यक्ति जो मेहनत से व्यवसाय करता है वह उद्यमी है।

**महान अर्थशात्री मार्शल के अनुसार**- उद्यमी किसी उद्योग का कप्तान होता है क्योंकि वह जोखिम एवं अनिश्चितता का केवल वाहक नहीं होता बल्कि एक प्रबंधक, भविष्यदृष्टा, नवीनतम उत्पादन विधियों का अविष्कारक तथा किसी देश के आर्थिक ढांचे का निर्माता भी होता है।

कृषि उद्यमिता, जिसे अक्सर कृषि उद्यमिता के रूप में जाना जाता हैए विभिन्न कृषि वस्तुओं और आदानों के उत्पादन और बिक्री से संबंधित है ।

कृषि उद्यमी वह व्यक्ति है जो कृषि क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक व्यावसायिक उद्यम शुरू करता है व्यवस्थित करता है और प्रबंधित करता है। मोटे तौर पर कृषि उद्यमिता या एग्रीप्रेन्योरशिप आमतौर पर ग्रामीण मानव संसाधनों को शामिल करते हुए कृषि संसाधनों में मूल्यवर्धन प्रदान करती है। कृषिउद्यम पहलों से निकलने वाली तैयार वस्तुएं और सेवाएं आम तौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों से खरीदी और उत्पादित की जाती हैंजिनकी खपत हालांकि शहरी और ग्रामीण दोनों हो सकती है ।

**भारत में कृषि उद्यमिता का दायरा**- कृषि उद्यमिता किसी देश की अर्थव्यवस्था को विकसित करने में मदद करती हैए उत्पादन में सुधार करती हैए श्रम के लिए बाजार बनाती है और नौकरी के बहुत सारे अवसर पैदा करती है और जो भारत को अपनी अर्थव्यवस्था के विकास के लिए और बेरोजगारी को कम करने के लिए कृषि उद्यमिता को प्रोत्साहित करने और समर्थन करने के लिए प्रभावित करती है।

- भारत के कृषि जलवायु क्षेत्र जैसे उष्णकटिबंधीय, उपोष्णकटिबंधीय और समशीतोष्ण जलवायु परिस्थितियाँ भारत को प्रकृति का उपहार हैं।
- उर्वरक, खाद, चारा, कीटनाशक फंफूदनाशक आदि इनपुट की हमेशा माँग बनी रहती हैं।
- कृषि के क्षेत्र में बीज, जैव एजेंटों, प्रतिरोधी किस्मों और रोगाणुओं की कटाई के लिए जैव प्रौद्योगिकी की बहुत संभावनायें है।
- सदी की आर्थिक वृद्धि को बढ़ाने के लिए भारत की निर्यात दर में काफी सुधार किया जा सकता है। डब्लूटीओ के अनुसार भारत में तेलए फलए अनाज, सब्जियां, मसाले आदि जैसे उत्पादन के लिए निर्यात बाजार की काफी संभावनायें है।
- वन, जैविक अपशिष्ट का उपयोग उत्पादन के लिए भी किया जा सकता है।
- स्थापित एवं वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग कर मशरूम की भी खेती की जा सकती है।

## कृषि उद्यमिता के लिए चुनौतियाँ

**1.खराब बुनियादी सुविधायें**- किसी भी प्रकार के विकास के लिए बुनियादी ढांचा एक महत्वपूर्ण शर्त है। ग्रामीण भारत में परिवहनसंचारए बिजली और विपणन नेटवर्क की तुलना में बुनियादी ढ़ाचागत सुविधाएं बहुत खराब है और इन सुविधाओं के विकास की सख्त जरुरत है।

2. वर्तमान युग में खराब प्रौद्योगिकीय और उपकरण, सूचना प्रौद्योगिकी, सूचना की खोज और उचित निर्णय लेने में महत्पूर्ण भूमिका निभा रही है। सूचना का अभाव कृषि उद्यमिता विकास में रुकावट का एक बड़ा कारण है।

**3. लोगों के बीच खराब उद्यमशीलता संस्कृति**- भारत में लोगों के बीच खराब उद्यमशीलता संस्कृति केवल गुजरातीए मारवाड़ी और राजस्थानी जैसे कुछ समुदायों में ही प्रचलित है। वे अपनी उद्यमशीलता की नकल के लिए जाने जाते हैं। शिक्षा और जागरुकता की कमी के कारण ग्रामीण लोगों में उद्यमशीलता संस्कृति के विकास में कमी आ रही है।

**कृषि उत्पादों के विपणन में समस्याएँ** - उत्पादन का तब तक कोई मूल्य नहीं है जब तक कि इसे बेचा न जाए और उपभोग न किया जाए। भंडारण सुविधाओं, उचित परिवहनए कृषि.उत्पाद बाजार की जानकारी को बढ़ावा देनेए कृषि वस्तुओं की कीमतों में उतार-चढ़ाव, असमान माँगों जैसी सुविधाओं का अभाव स्थानीय मध्यस्थों का प्रभाव आदि कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण में एक बड़ी समस्या पैदा करते हैं।

**अपर्याप्त संस्थागत उपाय और सरकारी नीतियाँ** - हाँलाकि संस्थाएँ सामाजिक प्रीटस सरकार ने भ्रष्टाचार और नौकरशाही जैसी समस्याओं के कारण नीतियों का कार्यान्वयन उचित नहीं लगता है। गाँव के ग्रामीण लोग अशिक्षा और अज्ञानता के कारण सरकारी नीतियों के बारे में नहीं समझते है और नीतियों का लाभ नहीं उठा पाते है। उद्योग और सेवा क्षेत्र के विकास की तुलना में कृषि क्षेत्र में सरकारी सहायता बहुत कम है।

## भारत में कृषि उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव

1. ग्रामीण युवाओं को उद्यमशीलता शिक्षा

और उचित प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान की जाएगी। ग्रामीण क्षेत्रों में ढ़ाचागत व्यवस्था में सुधार किया जाना चाहिए।

2. उद्यमशीलता गतिविधि को बढ़ावा देने के लिए व्यवसाय के आशाजनक कृषि और संबद्ध क्षेत्रों की पहचान करना।

3. वहाँ के नाबार्ड ग्रामीण क्षेत्रों में लोगो के बीच उधमशीलता संस्कृति को बढ़ावा देने और ग्रामीण विकास के लिए एक जीवंत वातावरण बनाने की तत्काल आवश्यकता है।

4. संभावित उद्यमियों के बीच तकनीकी दक्षता विकसित करने के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करने की सख्त आवश्यकता है।

5. नये कृषि उद्यम संगठनों के लिए सब्सिडीए प्रोत्साहन आदि का विस्तार करना।

6. वित्तीय और विपणन सहायता प्रदान करने के संदर्भ में समर्थन करना।

**भारत में कृषि उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए सरकारी योजनाएँ**

**1.कृषि**- व्यवसायों के लिए संस्थागत समर्थन

कृषि, कुटीर और लघु उद्योगों में ग्रामीण क्षेत्रों के मामले को देखने के लिए 12 जुलाई 1982 को आरबीआई द्वारा नाबार्ड का गठन किया गया था। अपने गठन के बाद से नाबार्ड ग्रामीण विकास और कृषि आधारित गतिविधियों से संबंधित सभी रिपोर्ट आरबीआईकोभेजती हैं।

**2. पंचायत मंडी**- यह अवधारणा बिचौलियों और दलालों के प्रभाव को कम करने और किसानों को शोषण से बचाने के लिए अस्तिव में आई। यह तभी होगा जब जिला पंचायत राज्य विपणन बोर्ड और कृषि विभाग के साथ मिलकर काम करेगी।

**3. राज्य कृषि विपणन बैंक**- इससे किसानों को मुख्य रूप से खाद्य फसलों और तिलहनों के लिए कृषि उपज के लिए उचित मूल्य प्राप्त करने में मदद मिलती है क्योंकि वस्तुओं की कीमतें सरकार द्वारा नियंत्रित होती हैं। इससे किसानों को बेहतर कीमत पाने और उपज से लाभ कमाने में मदद मिलती है।

**4 राज्य व्यापार निगम**- यह भारत सरकार के स्वामित्व वाला एक अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक निगम है और इसकी स्थापना 1956 में हुई थी। निगम के थोक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रबंधन में व्यापक विशेषज्ञता हासिल की है।

**5. आरकेवीवाई**- रफ़्तार एग्री बिजनेस इनक्यूबेटर (आर-एबीआई)

कुल 24 आर-एबीआई और 5 नॉलेज पार्टनर्सजो कृषि व्यवसाय उद्यमों की जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से (1) संबंद्धयोग्य लोगों इनक्यूबेट्स को समय पर सहायता सुनिश्चित करना (2) न्यूनतम व्यवहार उत्पाद (एमवीपी) को विपणन योग्य चरण और पैमाने पर अनुवाद के लिए सक्षम बनाना और सहायता प्रदान करना, उत्पाद और व्यवसाय को ऊपर उठाना (3) अपने दृष्टिकोण में तेजी से प्रयोग और संशोधन के लिए एक मंच प्रदान करना यानी कि समाधानों/क्रियाओं/उत्पादों/सेवाओं/व्यवसाय मॉडल आदि के आधार पर न्यूनतम व्यवहार उत्पाद (एमवीपी) को आनुपातिक दरों से बढ़ाएँ। आईसीएआरके तहत भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई) में कुल 14 आर-एबीआई है जो इनक्यूबेट्स को अपने उत्पादों, सेवाओं और व्यासायिक प्लेटफार्मों आदि को बाजार में लॉन्च करने सहायता के लिए काम कर रहे और उनके पैमाने को बढ़ाने में मदद करने के लिए संचालन के साथ-साथ तेज गति से

व्यावसायिक व्यवहार्यताको प्राप्त कर रहे हैं । आरकेवीवाई के तहत पूसाकृषि के हस्तक्षेप को सक्षम करना रफ़्तार कृषि व्यवसाय उद्यमिता को बढ़ावा दे रहा है

**6. डीबीटी** - बीआईआरएसी का सतत उद्यमिता और उद्यम विकास कोष सीड फंड, और मेधावी विचारों नवाचारों और प्रौद्योगिकियोंको स्टार्टअप्स के लिए पूंजी सहायता प्रदान करता है BIRAC की जैव प्रौद्योगिकी इग्निशन ग्रांट क्ष्बीआईजीद्ध अनुसंधान को एक स्टार्टअप के माध्यम से प्रौद्योगिकी करीब बाजार प्रोत्साहित करते हुए व्यावसायीकरण की क्षमता वाले व्यावसायिक विचारों का समर्थन करता है । इसके अलावा ई युवा (मूल्य वर्धित उपक्रम के लिए युवाओं को सशक्त बनाना) बीआईआरएसी के इनोवेटिव ट्रांसलेशनल रिसर्च) का उद्देश्य उद्यमशीलता नवाचार युवा छात्रों और शोधकर्ताओं के बीच अनुप्रयुक्त अनुसंधान और आवश्यकता उन्मुख की संस्कृति को बढ़ावा देना है (सामाजिक या उद्योग) । जबकि योजना है फ़ेलोशिप प्रीण्इन्क्यूबेशन के माध्यम से उद्यमशीलता की संस्कृति को विकसित करने के लिए EYUVA। केंद्रों (EYCs) के माध्यम से कार्यान्वित किया गया और परामर्श समर्थन के बाद EYCs को विश्वविद्यालय संस्थान में स्थापित किया गया है और BIRAC Bio -NEST द्वारा इसका मार्गदर्शन किया जाता है जिसका समर्थन बायोइनक्यूबेटर करता है ।

**7. मएसएमई**-नवाचार, ग्रामीण उद्योग और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए एक योजना (एस्पायर) स्थापित करने में सहायता करती है। उद्यमिता में तेजी लाने और कृषि-उद्योग में नवाचार के लिए स्टार्ट अप को बढ़ावा देने के लिए प्रौद्योगिकी केंद्रों का नेटवर्क और ऊष्मायन केंद्र स्थापित करना आजीविका बिजनेस इनक्यूबेटर (एलबीआई) या प्रौद्योगिकी व्यवसाय इन्क्यूबेटर्स (टीबीआई) एस्पायर वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

**8. फंडिंग सहायता**- ऐसे कई मंत्रालय और एजेंसियां हैं जो नए व्यवसायों के लिए फंडिंग की पेशकश करते हैं जैसे अनुदान, आसान ऋण एइक्विटी भागीदारी एसब्सिडी एकर छूट एनिजी वित्त और ऋण साधन। उनमें से कुछ हैंस्टार्ट-अप इंडिया योजना के तहत फंड की धनराशि,प्रौद्योगिकी विकास बोर्ड का आसान ऋण, निधि प्रयास स्टार्ट.अप के लिए इन्क्यूबेशन को सहायता प्रदान करते हैं, मुद्रा योजनाए बीआईआरएसी, अनुदान एसएफएसी द्वारा उद्यम पूंजी सहायता योजना एएमएसएमई के लिए क्रेडिट गारंटी फंड ट्रस्ट, सिडबी स्टार्ट-अप सहायता योजना आदि

**भविष्य में उद्यमिता में संभावनायें**- विश्व अर्थव्यवस्था वर्तमान में वैश्वीकरण और अधिक जुड़ी हुई विश्व अर्थव्यवस्था के करण कृषि उद्यमशीला के अवसर बड़े पैमाने पर बढ़ रहे हैं। कृषि गतिविधियों के लिए कई प्रकार के आदानों की आवश्यकता होती है जैसे बीज, उर्वरक, कीटनाशक, कृषि उपकरण और कृषि प्रौद्योगिकी। इस प्रकार जैव उर्वरक, जैव कीटनाशक, वर्मी कंग्पोसिंटग, मिट्टी परीक्षण आदि जैसे क्षेत्रों से दिलचस्प व्यावसायिक संभावनाएं पैदा होती हैं।

## भारतीय कृषि उद्योग की वर्तमान स्थिति

भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ के रूप में कृषि उद्योग भारत की जीडीपी में लगभग 16ण्5: का योगदान देता है। 2022 तक भारतीय कृषि बाजार का मूल्य 435.9 बिलियन अमेरिकी डॉलर था और 2028 तक 580.82 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है जो 2023 और 2028 के बीच लगभग 4.9 प्रतिशत की सीएजीआर से बढ़ रहा है।